प्रश्न– **सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भारत की विविधता विशेषता ही नहीं, बल्कि दुर्गण भी रही है। सैद्धांतिक तौर पर यह उचित नहीं है, किन्तु विगत वर्षों में घटित हुए घटनाक्रमों ने इस विचार को जन्म दिया है। यद्यपि यह विचार संकीर्णताओं पर केन्द्रित है फिर भी आंतरिक सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौतियां उत्पन्न कर रहा है। उदाहरण सहित उत्तर दें।** **(200 शब्द)**

The diversity of India has not only been a speciality from the socio-cultural point of view but an evil also. It's not suitable theoretically but the events in the past has triggered this thought, although this thought is centered around narrowness still it creates serious threat to the internal security. Answer with examples.

(200 words)

मॉडल उत्तर

दृष्टिकोण:
- भूमिका में भारत की विविधता के बारे में चर्चा करें।
- पैरा चेंज करते हुए बताएं कि भी भारत विविधता वाला देश होते हुए भी क्या कारण रहा है कि आंतरिक सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न कर रहा है।
- अंत में संतुलित निष्कर्ष दें।

सामाजिक सांस्कृतिक विविधताओं में भारत सिद्धांत एवं वास्तविक रूप से एक बहुल समाज है। भारत का ऐतिहासिक पथ तीन पथों से होकर प्राचीन मध्य एवं आधुनिक काल से लेकर एक भारत श्रेष्ठ भारत की संकल्पना को साकार कर रहा है। भारत की संसदीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की अपार सफलता वैश्विक मंचों पर हमें महत्वपूर्ण प्रतिनिधित्व दिलाती है। जैसे कि अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा प्रोटोकॉल के खिलाफ जाकर भारतीय प्रधानमंत्री का स्वागत करना।

किन्तु विगत वर्षों में घटित हुए घटनाक्रमों ने आंतरिक सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न की है।

- **सांस्कृतिक सामाजिक विविधता**–भारत विविधताओं से युक्त देश है। विभिन्न धर्म, जाति, भाषा इत्यादि को मानने वाले लोग यहाँ निवास करते हैं। लेकिन 2013 का मुज्जफरनगर का साम्प्रदायिक हिंसा, महाराष्ट्र में मराठी–हिन्दी संघर्ष भारत की विविधता पर सवाल उठाते है।
- **सामाजिक–आर्थिक शोषण**–संविधान सामाजिक समता और संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण के दर्शन पर आधारित है, किन्तु अभी तक इस दर्शन का उचित महत्व नहीं मिला और वामपंथ एवं उग्रवाद जैसे विचारधारा का जन्म हुआ।
- बौद्ध सर्किट, हृदय, अतुल्य भारत, योग जहाँ सकारात्मक पहलू है , वहीं नागालैण्ड की पंचायत में महिलाओं का विरोध ट्रिपल तलाक, सबरीमाला मंदिर में महिलाओं को आने की अनुमति नहीं मिलना, कुछ वर्तमान में उठे नकारात्मक पहलू है जो भारत की विविधता पर सवाल उठाता है।

भारत का सामाजीकरण हो चुका है। सभ्यता एवं संस्कृति साध्य व साधन के रूप में कार्यरत है, फिर भी सांम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, बहुसंख्यवाद, अल्पसंख्यवाद आदि को छोड़ दिया जाए तो भारत में कोई बाध्यता नहीं है।